अध्याय 13

वाच्य

संस्कृत में वाच्य के 'प्रयोग' कहल जाला। प्रयोग के मतलब क्रिया के रूपान्तरित प्रयोग से बा। वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार क्रिया बदलत रहेले। क्रिया के रूपांतर में कबहूँ कर्त्ता, कबहूँ कर्म त कबहूँ भाव प्रधान हो जाला। एह से वाक्य में क्रिया के रूपांतरित प्रयोग के तीन स्थिति मानल गइल बा-1. कर्तरिप्रयोग (कर्त्ता के अनुसार) 2. कर्मणि प्रयोग (कर्म के अनुसार) 3. भाव प्रयोग (भाव के अनुसार)। वाच्य क्रिया के ऊ रूपांतरित प्रयोग बोधे होला जवना से एह बात के भाव प्रकट होला कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव में से कवना के प्रधानता बा। कहे के मतलब बा कि क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष में बदलाव के कवन प्रधान बा-कर्त्ता, कर्म भा दूनों में से कवनो ना। दोसरा तरह से कहल जा सकेला कि 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के वाच्य कहल जाला'। जइसे प्रयोग के तीन गो प्रकार कहल गइल बा ओइसहीं वाच्य के भी तीन रूप होला-1.कर्तृ (कर्तरि) वाच्य, 2. कर्म वाच्य, आ 3. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य- जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होखे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में रूपांतर कर्त्ता के अनुसार होखेला एहसे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर क्लास में व्याकरण पढ़ावत बाड़न', 'मैडम

क्लास में ग्रामर पढ़ावत बाड़ी', 'बाबूजी खाना खात बाड़न', 'माई खाना बनावत बाड़ी'। एह वाक्यन में क्रिया के लिंग, वचन भा पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार हो रहल बा एह से इ सब कर्तृवाच्य के वाक्य हवे स।

कर्मवाच्य-जवना वाक्य में कर्म के प्रधानता होखे ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्मवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होखेला। एह से ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'मैडम के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'बाबूजी द्वारा खाना बनावे के सामान खरीदल जाला', 'माई के द्वारा खाना बनावल जाला' एह सब वाक्यन में क्रिया के रूप कर्त्ता के अनुसार ना होके कर्म के अनुसार भइल बा, एह से इ सब कर्मवाच्य के वाक्य बाड़े स।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में रूपांतर करे खातिर कर्त्ता के करणकारक रूप में लिखल जाला आऊर क्रिया के कृदंतीय रूप में 'अल', 'ला', 'जाला', 'आय', 'आव' जोड़ दिहल जाला।

ऊपर के वाक्यन में 'सर के द्वारा', 'मैडम के द्वारा', 'बाबूजी के द्वारा' , 'माई के द्वारा' में कर्त्ता के करण बना दिहल गइल बा आ क्रिया में 'वल' के साथ 'जाला' जोड़ दिहल गइल बा। अइसहीं देखल जाय-'माई से खाना न बनावल जाई', 'सीता से गीत ना गवाई', 'हमरा से खाइल ना जाई'।

भाववाच्य- जवना वाक्य में भाव के प्रधानता होला ओकरा के भाववाच्य कहल जाला। भाववाच्य वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता

के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि भाव के अनुसार होखेला। एह से अइसन वाक्य के भाववाच्य कहल जाला। एह में क्रिया हमेश में रहेले। जइसे-'हमरा से बइठल नइखे जात', 'गुरुजी से व्याकरण पढ़ावे के काम नइखे हो पावत'। ए वाक्यन में ना त कर्त्ता के अनुसार क्रिया बा। एकरा साथे इहो बात ख्याल रखे के चाही कि भाववाच्य में क्रिया बा ना कर्म के आनुसार बल्कि भाव के अनुसार क्रिया हमेशा संयुक्त आ भूतकालिक रूप में रहेला।

तीनों में अंतर करे के मोट तरीका इ बा कि कर्तृवाच्य के कर्त्ता में आऊर कर्मवाच्य के कर्म में क्रम से 'ने' भा 'को' चिन्ह ना लागेला।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं-

(कर्तृवाच्य, प्रयोग, वाच्य, कर्मवाच्य, भाव)

(क) संस्कृत में वाच्य के.....कहल जाला।

(ख) 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म, भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के ..... कहल जाला।

(ग) जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होवे ओकरा के ..... कहल जाला।

(घ) जवना वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होवेला एह से ओकरा के .... कहल जाला।

(ङ) भाववाचक वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि ..... के अनुसार होखेला।

2. नीचे दिहल परिभाषन के मिलान करीं।

(क) कर्तृवाच्य(i) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव भाव के अनुसार होला।

(ख) कर्मवाच्य (ii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार होला।

(ग) भाववाच्य (iii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के अनुसार होला।

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर लिखीं।

1. वाच्य केकरा के कहल जाला?
2. कर्तृवाच्य आ कर्मवाच्य में उदाहरण का सँगे अंतर बतलाईं।
3. वाच्य के बदलल जाय-दादी कथा कहत बाड़ी, सोहन रोटी खात बाड़न, हम घरे जात बानी।